एक मिल कर दौड़ें बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल।
एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल।।५।।

कई सखियां एक साथ मिलकर होड़ बांधकर लम्बी पड़साल में दौड़ती हैं। कोई सखियां धनी को देखकर ही सुखी होती हैं और कहती हैं यही सबसे बड़ा आनन्द है।

एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल।।६।।

एक सखी मस्ती में भरी हुई मीठी रस भरी वाणी से श्री राजजी महाराज के गुण गाती है। एक सखी बाजे बजाती है। कई सखियां अपने सुन्दर गले से मिलकर गीत गाती हैं।

एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल।
एक पिउसों हंस हंस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल।।७।।

एक सखी अपनी कला के साथ स्वर पूरती है। दूसरी हाथ की कला दिखाकर स्वर तोड़कर स्वर पूरती है। एक धनी से हंस-हंसकर बातें करके आनन्द लेती है और तृप्त हो जाती है।

एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल।
एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल।।८।।

एक धनी के अदभुत मनमोहक स्वरूप को देखती है जिनके स्वरूप का वर्णन कैसे करें? एक धनी से गुझ बातें करती है और एक आनन्द मयी रसीली बातें करती है।

एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल।
एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल।।९।।

एक बड़े प्यार से बड़ा रस पैदा करती है और अपनी हकीकत बताती है एक अलबेली है जो अकेली ही हाथ में लाल रंग के फूल लेकर पिया के पास आती है।

एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल।।१०।।

एक अटपटी हालत में तिरछी चाल से आती है। एक हाथ में लाल छड़ी घुमाती आती है। एक अपने तिरछे नयनों से प्रेम रस में डूबी हुई श्री राजजी महाराज से सुख लेती है।

कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हंस दे ताल।।११।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से आनन्द में डूबी सखियां हंसती हुई ताली देकर उठती हैं।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। २३६७ ।।

बड़ी रामत

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री।।१।।

अपना घर अखण्ड परमधाम है जो सदा सुख देने वाला है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहें रात-दिन आनन्द की लीला करते हैं।

Nijanand App

नित इत विश्राम, पूरन हैं प्रेम काम।
हिरदे न रहे हाम, इस्क आराम री।। २ ।।

यहां सदा ही प्रेम की भरपूर मस्ती में आनन्द करते हैं जिससे हृदय में कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती। यही सबसे बड़ा इश्क का आराम है।

आराम तो इन विध लेवें, सबे भरी अहंकार।
पूरन हित पिउसों चित्त, जिनको नहीं सुमार।। ३ ।।

सब सखियां अपने स्वाभिमान में अपने चित्त में पिया का बेशुमार पूरा प्रेम लेकर इस तरह का आनन्द लेती हैं।

एक जुत्थ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख केहेत न आवे पार।
कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहें पिउ को विहार।। ४ ।।

सखियों का एक जुत्थ (समूह) मिलकर बैठता है। इनका सुख बेशुमार है। कोई-कोई सखियां छज्जे पर मिलकर बैठी हैं और धनी के आनन्द लेने की बातें करती हैं।

एक लम्बे हिंडोलें, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार।
एक झरोखे माहें, मिल बैठत जाहें, करें रती रेहेस विचार।। ५ ।।

कोई सखी लम्बे हिंडोलों में बैठकर झूलती है और शीतल सुगन्धित हवा का आनन्द लेती है। कई सखियां झरोखों में मिलकर बैठती हैं और रति रहस्य लीला पर विचार करती हैं।

एक पिउ मद मतियां, आवें ठेकतियां, कंठ खलकते हार।
एक जुदी जुदी आवें, स्वांत देखलावें, करें नूर रोसन झलकार।। ६ ।।

एक प्रीतम में मद मस्त है और उछलती हुई आती हैं। उससे उनके गले के हार हिलते हैं। एक अलग-अलग आती है और बड़ा शान्त स्वभाव दिखाती है, उसके मुख की शोभा झलकती है।

एक बांहें सों बांहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार।
एक दूजी के साथें, लिए कण्ठ बाथें, भूखन उद्दोतकार।। ७ ।।

कुछ सखियां बाहों में बांहें मिलाकर बड़े स्वाभिमान में आती हैं। वह एक दूसरे के गले में हाथ डाले हैं जिससे उनके आभूषण चमकते हैं।

एक कण्ठ हाथ छोड़ें, आगूं दौड़ें, कहे आइयो मुझ लार।
एक चढ़ें गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार।। ८ ।।

कुछ सखियां अपने गले से हाथ छुड़ाकर आगे भागती हैं और कहती हैं, मेरे साथ आओ। कोई सखियां रोशनदान से चढ़कर झरोखों से झांककर वनों को देखती हैं।

एक बैठत पलंगें पिउजीके संगें, खेलत प्रेम खुमार।
आप अपने अंगें, करत हैं जंगें, कोई न देवे हार।। ९ ।।

कोई सखी धनी के साथ पलंग पर बैठती है और प्रेम के मद में खेलती है। इस तरह से सभी सखियां आपस में लड़ाई का खेल खेलती हैं और कोई अपनी हार नहीं मानती।

Nijanand App

एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूं ए मनुहार।
अति उछरंगें, होत न भंगें, सत सुख संग भरतार।। १० ।।

एक सखी अपने तन में काम की मस्ती भरकर पतंगे की तरह अपने धनी पर बड़ी चाहना के साथ अभंग न होने वाली मस्ती से ऐसे फिदा होती है कि उसकी इस रिझाने की वृत्ति का कैसे वर्णन करूं?

एक प्रेम तरंगें, मद मछरंगें, बांहोंड़ी कण्ठ आधार।
एक अंग मकरंदें, काढ़त निकंदें, आवत नाहीं पार।। ११ ।।

एक सखी इश्क की तरंगों में मस्ती के गर्व से अपने प्राण वल्लभ के गले में हाथ डालती हैं। एक सखी अपने अंगों से काम की भरी शक्ति से हाथों को मरोड़ते हुए अंगड़ाई लेकर दिखाती है। जिसका पारावार नहीं है।

बादलियां आवें, रंग देखलावें, करें मोर कोयल टहुंकार।
अति घन गाजें, अम्बर बिराजे, सोभित रुत मलार।। १२ ।।

बादल घिरकर आसमान में आते हैं, गरजते हैं और अपना रंग दिखाते हैं। इससे मोर और कोयल आवाज करते हैं। ऐसी मलार (वर्षा) ऋतु की शोभा है।

रुचिया मेह, बढ़त सनेह, ए समया अति सार।
एक केहे सखी सीढ़ियां, दौड़ के चढ़ियां, होत सकल भोम झनकार।। १३ ।।

वर्षा बहुत प्रिय लगती है। इसमें प्रेम बढ़ता है। ऐसा मौसम अति प्यारा है। एक सखी दूसरी से कहकर दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ जाती है जिससे धरती पर झनकार की आवाज आती है।

एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूं चंचल आकार।
एक दौड़ के धसियां, बन में निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार।। १४ ।।

कुछ सखियां आमने-सामने से आती हैं, किन्तु अपनी चंचलता से बिना एक-दूसरे को छुए निकल जाती हैं। कुछ सखियां वर्षा ऋतु को देखकर मस्ती में दौड़कर वनों में घुस जाती हैं।

एक आइयां सघन में, धाए चढ़ी बन में, खेल करें अपार।
एक झूलें डारी चढ़ के, और पकड़ के, क्यों कहूं खेल सुमार।। १५ ।।

कुछ सखियां घने वनों में आकर उन पर चढ़कर बेशुमार खेल करती हैं। कुछ सखियां पेड़ों की डालियों को पकड़कर झूलती हैं। ऐसे खेल की शोभा को कैसे बताएं?

एक भांत बांदर की, ठेक दे चढ़ती, करती रंग रसाल।
एक दौड़ें पातों पर, करें चढ़ उतर, खेलत माहें खुसाल।। १६ ।।

कुछ सखियां बन्दर की तरह छलांग लगाकर पेड़ पर चढ़ जाती हैं और बड़ा आनन्द करती हैं। कुछ सखियां पत्तों पर दौड़ती हुई चढ़ती-उतरती हैं और बड़ी खुशी से खेलती हैं।

एक ठेक देती, बनसें रेती, कहा कहूं इनको हाल।
एक आइयां दौड़ रेती, इतथें जेती, खेलें एक दूजीके नाल।। १७ ।।

कुछ सखियां वन की रेती में ठेक देकर खेलती हैं। उनकी हालत को कैसे बताऊं? कुछ सखियां रेती में दौड़कर आती हैं और एक दूसरे के साथ खेलती हैं।

Nijanand App

एक जाए गड्ढें रेती, निकस न सकती, देवें एक दूजी को ताल।
एक काढ़ें घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूं इनकी चाल।। १८ ।।

एक रेती में धंस जाती है। जहां से निकल नहीं पाती, तो एक दूसरे को हाथ पकड़कर खींचती है। कुछ सखियां उन्हें निकालकर घसीटती हैं। कुछ ऊपर लेट जाती हैं। इनकी चाल की शोभा कैसे बताएं?

खेलते दिन जाए, हांसी न समाए, प्रेम पिएं संग लाल।
एक ठेक देतियां, रेती में गड़तियां, खेल होत कमाल।। १९ ।।

खेलते-खेलते दिन बीत जाता है और हंसी नहीं समाती। ऐसी श्री राजजी महाराज के प्रेम में गर्क होकर आनन्द लेती हैं। कुछ सखियां छलांग लगाकर रेती में धंस जाती हैं। इस तरह से कमाल का खेल होता है।

केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुन्झार।
एक दौड़ के जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार।। २० ।।

कुछ सखियां खेलकर निकलती हैं और अपने मद के रूप को दिखाती हैं। कुछ सखियां दौड़कर हौज कौसर तालाब में एक-दूसरे के साथ कूद जाती हैं।

एक आवें दौड़ कर, गिरें उपरा ऊपर, किन विध कहूं ए रंग।
एक लरें पानी सें, जुत्थ जुत्थ सें, देखो इनको जंग।। २१ ।।

कुछ सखियां दौड़ती-दौड़ती आती हैं और एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़ती हैं। उनके इस तरह के आनन्द को कैसे कहूं? कुछ सखियां टोले-टोले पानी उछालकर लड़ती हैं। इनकी जल की लड़ाई को देखो।

पानी ऐसा उड़ावें, जानो अम्बर बरसावें, खेल करें न बीच में भंग।
क्यों ए न थकें, ऐसे अंग अर्स के, आगूं सोहें पुतलियां नंग।। २२ ।।

पानी ऐसा उछालती हैं जैसे यह आकाश से बरस रहा हो। ऐसा लगातार उछालती रहती हैं। यह परमधाम के तन किसी तरह से थकते नहीं हैं। लगता है कि यह नगों की पुतलियां हों।

एक खेल छोड़ें, दूजे पर दौड़ें, अंग न माए उछरंग।
एक खिन में अर्स परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग।। २३ ।।

कुछ सखियां पानी का खेल छोड़कर दूसरे खेल की तरफ दौड़ती हैं। इनके तनों में मस्ती नहीं समाती। इनके अंग में इतनी उमंग है कि एक क्षण में घर से दूर जाकर खेल करती हैं।

परिकरमा कर आवें, पल में फिर आवें, आए कदमों लगें सब संग।
कहे महामती, सब रंग रती, क्यों कहूं प्रेम तरंग।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सभी सखियां एक पल में घूम-फिरकर श्री राजजी के चरणों में वापस आती हैं। यह सब प्रेम में मगन हैं इनकी प्रेम की तरंगों का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App